उद्धार की गाथा

अध्याय 28ः सुसमाचार का अन्याय

डॉ. डेविड प्लॉट

आइए हम यशायाह अध्याय 53 खोल लें। हम वास्तव में अध्याय 52 के अन्त से आरंभ करेंगे। हम इस अध्ययन में यशायाह की थियोलॉजी के सर्वोच्च नगीने को देखेंगे, जैसा बहुत से विचारक इसे नाम देते हैं। क्या आपको यशायाह की पुस्तक पढ़कर आनन्द प्राप्त नहीं होता है? आज जो हमारा पाठ है उसे किसी ने कहा कि वह मसीह के संबन्ध में भविष्यद्वाणियों का एवरेस्ट पर्वत है। और वह वास्तव में है भी। यह बाइबल का सर्वोच्च सन्देश है।

मैं तो यहां तक कहूंगा कि यह संसार का सर्वोच्च सन्देश है। स्पर्जन ने इस अध्याय को कहा, "यह छोटी बाइबल और सुसमाचार का सार है।" आज हम क्रूस से 700 वर्ष पूर्व लिखी गई क्रूस की दुःख भरी परन्तु महिमामय चित्रण देखेंगे। हमें ये वचन मसीह के आगमन से बहुत पहले दिए गए थे और मैं चाहता हूं कि आप इस भयानक परन्तु महिमामय सत्यता को देखें। साथ ही मैं चाहता हूं कि आपकी आत्मा उस सत्य से अभिभूत हो जाए कि यह भयानक परन्तु महिमामय सत्य– क्रूस परमेश्वर की योजना थी।

हमारा अध्ययन संपूर्ण यशायाह का ही होगा। यशायाह में हम परमेश्वर के बारे में जो देखते हैं तो कुछ पदों में हम परमेश्वर का क्रोध और दण्ड का वर्णन भी पाते हैं और साथ ही कुछ स्थानों में हम परमेश्वर के प्रेम और उसकी दया का अति मनोहरण वर्णन भी देखते हैं। कहीं कहीं तो हम उसके क्रोध से स्तब्ध रह जाते हैं तो कहीं कहीं हम उसके प्रेम को देखकर अवाक् रह जाते हैं। अब आप सोच रहे होंगे कि उसके प्रेम का ऐसा प्रदर्शन वहां कहां है?

एक अति क्रोधी परमेश्वर प्रेमी कैसे हो सकता है? या एक ऐसा प्रेमी परमेश्वर क्रोध कैसे करेगा? तो हम अध्याय 53 में परमेश्वर का क्रोध, उसका प्रेम, उसका दण्ड, उसकी दया देखेंगे। हमने पहले से ही ठान लिया थी कि इस अध्ययन में हम गहरा चिन्तन करेंगे कि परमेश्वर सच्चा कैसे है? धर्मी कैसे है? न्यायोचित कैसे है? और दोषी पापियों को निर्दोष कैसे कह सकता है? यह कैसे संभव है? परमेश्वर सच्चा होकर दोषी पापियों को निर्दोष कैसे कह सकता है? यदि आप अलौकिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो यह एक प्रकार से निन्दा है।

आप चाहें रुढ़ीवादी हों, मुक्तविचारवादी हों या अग्रगामी हों, इससे कोई अन्तर नहीं पड़ेगा। हम सब में सही और गलत का विवेक है और हम सब सही की सराहना करने के और गलत को दोष देने के पक्ष में हैं। परन्तु सुसमाचार अन्याय यह है कि परमेश्वर पूर्णरूपेण गलत बात को सही कहता है। यह कैसे संभव हो सकता है? इस अन्याय का उत्तर है, सेवक!

कृपया यशायाह 52:13 देखें वहां लिखा है, "देखो मेरा दास..." आप "दास" को रेखांकित कर लें। यशायाह की पुस्तक में हम "दास" शब्द बार बार देखेंगे जिसका अभिप्राय इस्राएल से है। उदाहरण के लिए यशायाह 41:8 जहां लिखा है, "मेरे दास इस्राएल" अतः यहां दास शब्द इस्राएल जाति के लिए आया है। यशायाह 49:5 में दास शब्द यशायाह के लिए काम में लिया गया है। अतः आप हर जगह "दास" शब्द के उपयोग को कष्टिन सेवक मसीह यीशु से न जोड़ें।

परन्तु यहां अध्याय 53 में और अन्य कुछ स्थानों में जैसे भजनों "दास" का अभिप्राय एक भावी मुनष्य से है और हम जानते हैं कि वह प्रभु यीशु है, विशेष करके यहां अध्याय 53 में। यशायाह अध्याय 53 के सन्दर्भ नये नियम में यीशु के संबन्ध में सात जगह काम में लिया गया है। अध्याय 53 के 12 पदों में से 8 पद केवल यीशु के विषय में हैं जो नये नियम में संदर्भित हैं। अतः यीशु के आगमन के 700 वर्ष पूर्व हमारे सामने यह चित्रण है। तो आइए हम पढ़ते हैं, "देखो मेरा दास बुद्धि से काम करेगा, वह ऊंचा, महान् और अति महान् हो जाएगा।"

यशायाह 52:14–53:12, "जैसे बहुत से लोग उसे देखकर चकित हुए (क्योंकि उसका रूप यहां तक बिगड़ा हुआ था कि मनुष्य का सा न जान पड़ता था और उसकी सुन्दरता भी आदमियों की सी न रह गई थी), वैसे ही वह बहुत सी जातियों को पवित्र करेगा और उसको देखकर राजा शान्त रहेंगे, क्योंकि वे ऐसी बात देखेंगे जिसका वर्णन उनके सुनने में भी नहीं आया, और ऐसी बात उनकी समझ में आएगी जो उन्होंने अभी तक सुनी भी न थी। जो समाचार हमें दिया गया, उसका किसने विश्वास किया? और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट हुआ? क्योंकि वह उसके सामने अंकुर के समान, और ऐसी जड़ के समान उगा जो निर्जल भूमि में फूट निकले; उसकी न तो कुछ सुन्दरता थी कि हम उसको देखते, और न उसका रूप ही हमें ऐसा दिखाई पड़ा कि हम उसको चाहते। वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; वह दुःखी पुरुष था, रोग से उसकी जान पहिचान थी; और लोग उससे मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया, और हम ने उसका मूल्य न जाना। निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुःखों को उठा लिया; तौभी हम ने उसे परमेश्वर का मारा–कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। परन्तु वह हमारे ही अपराधों के

कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं। हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया। वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा और अपना मुंह न खोला; जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय और भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुंह न खोला। अत्याचार करके और दोष लगाकर वे उसे ले गए; उस समय के लोगों में से किसने इस पर ध्यान दिया कि वह जीवतों के बीच में से उठा लिया गया? मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पड़ी। उसकी कब्र भी दुष्टों के संग ठहराई गई, और मृत्यु के समय वह धनवान का संगी हुआ, यद्यपि उसने किसी प्रकार का उपद्रव न किया था और उसके मुंह से कभी छल की बात नहीं निकली थी। तौभी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया; जब वह अपना प्राण दोषबलि करे, तब वह अपना वंश देखने पाएगा, वह बहुत दिन जीवित रहेगा; उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगा। वह अपने प्राणों का दुःख उठाकर उसे देखेगा और तृप्त होगा; अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा; और उनके अधर्म के कामों का बोझ आप उठा लेगा। इस कारण मैं उसे महान् लोगों के संग भाग दूंगा, और वह सामर्थियों के संग लूट बांट लेगा; क्योंकि उसने अपना प्राण मृत्यु के लिये उण्डेल दिया, वह अपराधियों के संग गिना गया, तौभी उसने बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया, और अपराधियों के लिये विनती करता है।"

हे परमेश्वर हम प्रार्थना करते हैं कि तू वचन को समझने में हमारी सहायता कर, हमने जा पढ़ा उसके आश्चर्य को समझाने में और तेरी महिमा, तेरे उपकार, और तेरी महानता को समझने में हमारी सहायता कर कि तू ने कैसे अपने पुत्र को कुचल दिया। हम प्रार्थना करते हैं कि तेरे श्रोता कष्टिन सेवक के चित्रण से प्रोत्साहन पाएं, शान्ति पाएं और सामर्थ्य पाएं। हम प्रार्थना में उन लोगों को भी स्मरण करते हैं जिन्होंने आज पहली बार अपने पापों को देखा तथा उनका मन मसीह यीशु के प्रेम के लिए खुला है और हम प्रार्थना करते हैं कि तेरे वचन के सत्य को सुनकर अनेक जन पापों से बचाए जाएं। यीशु के नाम में हम यह प्रार्थना करते हैं, आमीन!

अधिकांश विचारक इन 15 पदों, को जिन्हें हमने पढ़ा 3–3 पदों को पांच भागों में विभाजित करते हैं। मैं भी यही करना चाहता हूं। यशायाह 52 से यशायाह 53 तक के इन पांच सत्यों पर ध्यान करना चाहता हूं।

पहला सत्य है– परमेश्वर का दास। यशायाह कहता है, वह घृणित दिखेगा परन्तु उद्धारक होगा। अध्याय 52 के ये अन्तिम तीन पद अध्याय 53 की भूमिका हैं। हम आरंभ ही से उस दास में यह विचित्र परन्तु परोक्ष दो परस्पर विरोधी बातें देखते हैं।

एक ओर तो वह मनुष्य रूप में दास है। वह स्पष्ट रूप से एक मुनष्य की चर्चा करता है। परन्तु वह मात्र मानव ही नहीं है। वह मानवरूप में एक दास है जिसका स्वभाव भयानक है, स्वयं में नहीं परन्तु मनुष्यों के दुर्व्यवहार के कारण। उसका रूप बिगड़ गया था। पद 14 में लिखा है कि वह मनुष्य का सा न जान पड़ता था। हम जब सुसमाचार वृत्तान्तों में यीशु की मृत्यु के संबन्ध में पढ़ते हैं तो देखते हैं कि उसके मुंह पर थप्पड़ मारे गए थे, उस पर थूका गया था, उसके सिर पर घूंसे मारे गए थे।

यशायाह अध्याय 50 में स्पष्ट लिखा है कि वह कोड़े खाने के लिए अपनी पीठ दे देगा और दाढ़ी नोचनेवालों के लिए अपने गाल। वह मनुष्य द्वारा दुर्व्यवहार के अधीन हो जाएगा। इस प्रकार उसका रूप भयानक दिखेगा परन्तु क्योंकि वह परमप्रधान है इस संपूर्ण अंश में उसका सेवक रूप भयानक है परन्तु पद 13 में उसका परिचय देखिए, "मेरा दास बुद्धि से काम करेगा, वह ऊंचा महान और अति महान हो जाएगा।"

आपको स्मरण है हमने पिछले अघ्ययन में यशायाह अध्याय 6 क्या पढ़ा था? राजा उज्जिय्याह के मरणोपरान्त यशायाह ने क्या देखा था? "मैं ने प्रभु को बहुत ही ऊंचे सिंहासन पर विराजमान देखा।" परमेश्वर के इस विवरण के चार संदर्भों में यह भी एक है। अन्य तीन परमेश्वर के बारे में हैं। अतः हम आरंभ ही से देखते हैं कि परमेश्वर का यह दास एक साधारण मनुष्य नहीं है। यद्यपि वह पूर्ण मानव है वह अलौकिक है। वह एक मनुष्य रूपी दास है जिसका चेहरा देखने में भयानक है परन्तु इसके साथ ही वह परमप्रधान परमेश्वर है। जो सब जातियों को पवित्र कर देगा।

उसे देखकर राजा भी मुंह बन्द कर लेंगे। पद 15 में लिखा है कि वह बहुत सी जातियों को पवित्र करेगा हम देख चुके हैं कि पुराने नियम में बलि का लहू पश्चाताप के ढक्कन पर, वेदी पर या लोगों पर छिड़का जाता था जिसका अर्थ था किसी की ओर से बलि देना। यशायाह कहता है कि उसका लहू सब जातियों पर छिड़का जाएगा।

पौलुस ने इसी पद 15 का संदर्भ रोमियों को लिखे पत्र के अध्याय 15 में दिया है। वह कहता है कि मसीह यीशु का लहू सब मनुष्यों, जातियों, भाषाओं राज्यों, सब के ऊपर छिड़का गया, बलि किया गया है इसलिए

वह सब जातियों में सुसमाचार सुनाता है। प्रभु यीशु सबका राजा है। पद 15 के अन्त में वह कहता है, "वे ऐसी बात देखेंगे जिसका वर्णन उनके सुनने में भी नहीं आया, और ऐसी बात उनके समझ में आएगी जो उन्होंने अभी तक सुनी भी न थी। यह अन्यजातियों के विषय में कहा गया है जिन्होंने भविष्यद्वाणी न सुनी और न ही जिनके पास पुराने नियम की यह आशा है।"

अन्यजातियां उसे देख कर समझ पाएंगी कि उसने क्या किया। वह घृणित लगेगा परन्तु वह उद्धार दिलाएगा। जिस मानवीय दास का रूप बिगाड़ दिया गया वह बहुत सी जातियों को पवित्र करेगा। मेरे भाइयों और बहनों इस दास को सहानुभूति की आवश्यकता नहीं, आवश्यकता तो इस बात की है कि आप उसकी उपासना करें। वह घृणित दिखाई देता है परन्तु वह वास्तव में उद्धारकर्त्ता है।

दूसरा सत्य, परमेश्वर उसे प्रकट करेगा और हम उसका त्याग करेंगे। अध्याय 53 के इन प्रथम तीन पदों में एक प्रश्न है, "जो समाचार हमें दिया गया उसका किसने विश्वास किया? और यहोवा का भुजबल किस पर प्रकट हुआ?" यर्थाथ में, परमेश्वर का सामर्थ्य प्रकट हआ है। कहने का अर्थ यह है कि इस दास में परमेश्वर का सामर्थ्य स्पष्ट प्रकट है तथापि मनुष्यों ने उसे नहीं अपनाया।

"वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था।" दूसरे शब्दों में उससे किसी ने संबन्ध रखना नहीं चाहा। यह उसका अपमान है। पद 2, "वह उसके सामने अंकुर के समान, और ऐसी जड़ के समान उगा जो निर्जल भूमि में फूट निकले।" यशायाह कहता है कि यह दास एक फलदायक वृक्ष की नाई जो ऋतु में फल रहा है, प्रकट नहीं होगा। इसकी अपेक्षा वह एक अंकुर की नाई जो सूखी भूमि में फूटता है, प्रकट होगा।

इसे पढ़कर आपके मन में क्या एक अनजान गौशाला का विचार नहीं आएगा जहां एक शिशु का चरनी में जन्म होगा? यह शिशु रोमी सम्राज्य को हिलाकर रख देगा। यह शिशु मानवीय इतिहास का मार्ग बदल देगा। यह शिशु 30 वर्ष अज्ञातवास में था तदोपरान्त जंगल में एक विचित्र मनुष्य के पास जाकर कहता है, "मुझे बपतिस्मा दे।" उसमें तो कुछ भी महानता दिखाई नहीं देती है कि हम उसकी ओर देखें। उसे चाहने का तो सौंदर्य उसमें है ही नहीं। इस उद्धारक के केश और रूप तो प्रभावी हैं ही नहीं।

उसकी दीन दशा देखिए। "वह दुःखी पुरुष था, रोग से उसकी जान पहचान थी; लोग उससे मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया, और हमने उसका मूल्य न जाना।" उसका मान नहीं रखा। उसका रूप, उसका

काम करने का तरीका, उसका व्यवहार, जीवन, धन और संपदा के बारे में उसकी बातें घमण्ड और दीनता के विषय उसकी समझ आदि सब, हमें उससे किसी प्रकार का संबन्ध नहीं रखना था। इस स्वार्थ और पद प्रतिष्ठा के लोभी संसार में हम उसके बारे में सोच भी नहीं सकते। परमेश्वर तो उसे प्रकट करेगा परन्तु मनुष्य उसे अस्वीकार करेगा।

अब आता है तीसरा सत्य जो मुख्य भाग है। यह पराकाष्ठा है। अतः हम इस पर ध्यान देंगे। उसका वध किया जाएगा कि हमारा उद्धार हो। हमने अपने अध्ययनों में पुराने नियम के बलि विधिविधान को देखा है जो उसने अपने लोगों के लिए तैयार किया था। बलिदान तो अनेक हैं परन्तु प्रतिवर्ष तो मुख्य बलिदान थे। एक, फसह का पर्व जब घर घर में एक मेमना बलि किया जाता था।

मेमने का बलिदान पापों को ढांकने का चिन्ह था। यही फसह का पर्व था। दूसरा लैव्यव्यवस्था में व्यक्त पश्चाताप का दिन जब एक बलि का पशु लाया जाता था जिसका लहू पश्चाताप के ढंकने पर और महापवित्रस्थान पर छिड़का जाता था जिसका अभिप्राय था पापमोचन हो गया। प्रायश्चित का वास्तविक अर्थ है ढांकना। उनके पाप बलि के पशु के लहू के ढांक दिए गए थे। इसके बाद वे एक बकरा लेते थे जिसके ऊपर महायाजक हाथ रखकर प्रजा के पापों को अंगीकार करता था। इस बकरे को बलि का बकरा कहते थे और उस बकरे को जंगल में दूर छोड़ दिया जाता था। इसका अर्थ होता था कि उस बकरे ने सबके पाप उठा लिए और वह जंगल में लोप हो गया कि फिर कभी दिखाई न दे।

पद 4, "हमारे रोगों को सह लिया और हमारे दुःखों को उठा लिया" –पापों के दुःखों को। ये वही शब्द हैं जो लैव्यव्यवस्था अध्याय 16 में पाए जाते हैं। आप इस शब्द "उठा लिया" को रेखांकित करके **हाशिये** में लैव्यव्यवस्था 16 लिख लें। वह हमारे पाप उठा लेगा और हमारे उद्धार के लिए वध किया जाएगा। इसका अभिप्राय क्या है ?

पहला, वह दास पाप का दण्ड भोगेगा। यीशु पाप का दण्ड अपने ऊपर ले लेगा। पद 4 में यही तो लिखा है, "हमारे दुःखों को उठा लिया"– हमारे पाप के दुःखों को। वह घायल किया जाएगा, कुचला जाएगा, मारा पीटा जाएगा, पीठ पर कोड़े खाएगा। क्रूस पर यीशु का शारीरिक कष्ट और आत्मिक संताप पाप के दण्ड का प्रदर्शन ही तो है। वह पाप का दण्ड भोगने आएगा। परन्तु यही नहीं इससे भी अधिक है अन्यथा अध्याय 53 के मुख्य विचार से हम चूक जाएं।

वह पाप का दण्ड भोगने आएगा। परन्तु यही नहीं इससे भी अधिक है अन्यथा अध्याय 53 के मुख्य विचार से हम चूक जाएं।

वह पाप का दण्ड ही नहीं भोगेगा, यशायाह कहता है कि वह पापी का स्थान ही ले लेगा। अब आप पद 4–6 के बीच जितने भी "हम," "हमारे" शब्द आते हैं उन पर गोला बना दीजिए।

"निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुःखों को उठा लिया; तौभी हमने उसे परमेश्वर का मारा कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं। हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सब के अधर्म का बोझ उस पर लाद दिया।"

इन तीन पदों में आप दस स्थान पर गोले बना चुके हैं। यशायाह हमें बार–बार स्मरण करवा रहा है कि वह जो भी कर रहा है वह हमारे लिए है और हमारे स्थान पर है। वह पाप और अधर्म का बोझ उठा रहा है। वह हमारे स्थान पर मार खा रहा है, घाव सहन कर रहा है, कुचला जा रहा है पापियों के लिए। वह पाप का दण्ड ही नहीं सह रहा है, वह पापियों का दण्ड स्वयं अपने ऊपर ले रहा है।

क्या परमेश्वर पापियों से घृणा करता है? सुनिये भजन 5:5–6 में क्या लिखा है, "घमण्डी तेरे सम्मुख खड़े होने न पाएंगे; तुझे सब अनर्थकारियों से घृणा है। तू उनको जो झूठ बोलते हैं नष्ट करेगा, यहोवा तो हत्यारे और छली मनुष्य से घृणा करता है।" इसे लिख लीजिए कि परमेश्वर उनसे घृणा करता है और उन्हें नष्ट करेगा। पहले 50 भजनों में 14 बार लिखा है कि परमेश्वर छली और दुष्ट मनुष्यों से घृणा करता है। झूठ बोलनेवाले पर उसका कोप भड़कता है। पुराने नियम में ही नहीं नये नियम में भी यही कहा गया है। देखिए यूहन्ना 3 जिसमें परमेश्वर के प्रेम के बारे में सर्वप्रसिद्ध पद है–यूहन्ना 3:16 पापियों से परमेश्वर के क्रोध का उल्लेख। 3:36 में है परन्तु हम उस पर ध्यान नहीं देते हैं।

क्या परमेश्वर पापियों से घृणा करता है? जी हां, वचन में लिखा है। क्या परमेश्वर पाप से घृणा करता है और पापियों से प्रेम करता है? एक अर्थ में यही है परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि इसका यह अर्थ भी न हो कि परमेश्वर पापियों से घृणा करता है। यह कैसे संभव हो सकता है? यह क्रूस का अर्थ समझने की कुंजी है। जब हम पाप से परमेश्वर की पवित्र घृणा और पाप का पवित्र न्याय देखते हैं तब हमें अति सावधान

रहना है कि इसे हम अपनी अपेक्षा अन्यों के लिए समझें। पाप तो हमारा अभिन्न अंग है। वह हमारा व्यक्तित्व है। हम पापी हैं–पवित्र परमेश्वर के विरुद्ध पापी स्त्री–पुरुष! पाप तो हमारा अंश बन चुका है।

अतः जब हम पाप के लिए परमेश्वर की पवित्र घृणा, पवित्र दण्ड देखते हैं तो वह वास्तव में पाप ही के प्रति है परन्तु वह हमसे अलग नहीं है जैसे कि हमारा झूठ, छल, लालसा आदि। यही कारण है कि उसका दण्ड, पाप के प्रति उसकी पवित्र घृणा पापी पर आ पड़ते हैं। और क्रूस का सौंदर्य यह है कि जब यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया तब उसने झूठ, छल और लालसा की ही कीमत नहीं चुकाई, मेरे भाइयों और बहनों वह हमारे स्थान में खड़ा हो गया और उसने पाप के प्रति परमेश्वर की पवित्र घृणा, पवित्र दण्ड और पवित्र क्रोध को ही नहीं हमारे लिए नियत इन अभिशापों को अपने ऊपर ले लिया। यीशु ने हमारा स्थान ले लिया और दण्ड अपने ऊपर ले लिया।

अतः हम अति सावधान रहें और धार्मिक रुढ़ीवादी शब्दावलियों पर निर्भर न करें जो हमें अच्छी लगती हैं और क्रूस को सामर्थ्य से वंचित करती हैं। वह पाप का दण्ड अपने ऊपर ले लेता है और पापियों का स्थान ले लेता है। अब हम चर्चा करेंगे कि परमेश्वर पापियों से प्रेम करता है और उनसे घृणा भी करता है। परन्तु अभी हम क्रूस को समझने की कुंजी देखेंगे। पाप का सार है मनुष्य परमेश्वर के स्थान पर आना चाहता है। पद 6 को रेखांकित कर लो। यह एक ही पद में सुसमाचार है, "हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सब के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।"

मैं तो अपनी मर्ज़ी करुंगा। हम सब यही करते हैं। आज बहत से शिक्षक और प्रचारक हैं जो आपसे कहेंगे कि स्वयं पर भरोसा करो और आत्मविश्वास रखो। वे आपसे धोखा करते हैं कि आप स्वयं में लौट आएं। स्वयं पर भरोसा, आत्मविश्वास और स्वयं पर निर्भर न करें। आप भेड़ों के समान निरुददे्श्य हैं। महाचतुर, महाबुद्धिमान, महाधनी, महापुरुष आप सब निरुददे्श्य भेड़ों की नाईं अपना अपना मार्ग लिए हुए हैं और घमण्ड से भरे हुए हैं। आप सब परमेश्वर से दूर हैं, उस परमेश्वर से दूर जो असीमित भला है और अनन्त महिमा से पूर्ण है और हमारी आज्ञाकारिता के अनन्त योग्य और आप उसे "नहीं" कहते हैं।

मनुष्य स्वयं को परमेश्वर के स्थान पर रखता है, जो पाप का सार है। परमेश्वर स्वयं को मनुष्य के स्थान पर रखता है। वह अपने पुत्र को, अलौकिक दास को आपके और मेरे स्थान पर रखता है। और हमारे

विद्रोह, हमारे पाप की ही नहीं हमारा दण्ड अपने ऊपर ले लेता है कि हमारा उद्धार हो। यशायाह कहता है, "वह तुम्हारे स्थान पर वध किया जाएगा कि उसके लहू से तुम्हारा उद्धार हो।" यह तीसरा सत्य है।

चौथा सत्य, वह निष्पाप निःशब्दता में कष्ट उठाएगा। पद 7, "वह सताया गया तौभी सहता रहा और अपना मुंह न खोला; जिस प्रकार भेड़ वध होने के लिए और भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुंह न खोला।" और यह इन तीन–तीन पदों का अन्तिम भाग है। पद 9 का **उत्तर भाग** देखिए, "उसने किसी प्रकार का उपद्रव न किया था और उसके मुंह से कभी छल की बात न निकली थी।"

इन पदों से प्रकट है कि यीशु में ऐसा कोई पाप नहीं था कि वह ऐसा कष्ट उठाता। लिखा है कि उसने अपनी कब्र दुष्टों के मध्य बनाई। निष्पाप को पापियों के मध्य कब्र दी गई। वह वध के लिए जाता मेमना और ऊन कतरने के लिए तैयार भेड़ी था। वह विस्मयकारी निःशब्दता में खड़ा था। इस भविष्यद्वाणी का विवरण देखिए। यह इस संपूर्ण अध्ययन में तो है परन्तु विशेष करके इन पदों में जो 700 वर्षों पूर्व हुआ।

मेरे पास इन सब संदर्भों के लिए समय नहीं है परन्तु आप इन्हें लिख लें। मत्ती 26:62–63,– काइफा के समक्ष मध्यरात्री का अभियोग। उस पर झूठे गवाह आरोप लगा रहे थे अतः महायाजक ने प्रतिवाद मांगा तो यीशु ने कुछ नहीं कहा। इसी प्रकार अगले दिन मरकुस 15:4–5 में पीलातुस ने यीशु से प्रश्न किया कि वे इतना अधिक दोष लगाते हैं परन्तु तू कुछ कहता नहीं है। पीलातुस यीशु के चुप रहने के कारण आश्चर्यचकित था।

पीलातुस ने यीशु को हेरोदेस के पास भेजा– लूका 23:9 परन्तु यीशु वहां भी चुप रहा। जब सैनिक उसका ठट्ठा कर रहे थे और उसे आहत कर रहे थे तब भी वह चुप था। पीलातुस से यीशु ने कुछ नहीं कहा तो पीलातुस ने कहा कि वह निर्दोष है जैसे कि उसने रात्री पूर्व यशायाह 53 पढ़ा हो। यहां लिखा है कि उसकी कब्र भी दुष्टों के संग ठहराई गई और मृत्यु के समय वह धनवान का संगी हुआ। मत्ती 27:57 में लिखा है, "जब सांझ हुई तो यूसुफ नामक अरिमतिया का एक धनी मनुष्य जो आप ही यीशु का चेला था, आया। उसने पीलातुस के पास आकर यीशु का शव मांगा। इस पर पीलातुस ने देने की आज्ञा दी। यूसुफ ने शव लिया, उसे उज्जवल चादर में लपेटा, और उसे अपनी नई कब्र में रखा।"

आप देख रहे हैं न? सब कुछ योजना के अनुसार चल रहा है। किसकी योजना? अभी देखते हैं। आपने इस भविष्यद्वाणी का विवरण देखा है? इसके परिणाम को भी देखिए, इसके बारे में सोचिए। मैं आशा करता हूं कि प्रत्येक विश्वासी श्रोता का मन प्रफुल्लित होगा कि आपके विश्वास के कर्त्ता प्रभु यीशु की भविष्यद्वाणी उससे 700 वर्ष पूर्व कर दी गई थी और वह भी एक एक पक्ष अतिस्पष्ट। यह जान लीजिए कि परमेश्वर ने आपके लिए यह निश्चित किया था।

आपको स्मरण होगा प्रेरितों के काम की पुस्तक में कूश देश का खोजा अर्थात पुरुष जो सरकारी अधिकारी था। वह धर्मशास्त्र से पढ़ता हुआ रथ में जा रहा था कि पवित्र आत्मा फिलिप्पुस को उसके मार्ग में ले गया। आप बता सकते हैं, वह क्या पढ़ रहा था? यशायाह 53:7–8 मैं चाहता हूं कि आप उसे एक खोजे के दृष्टिकोण से पढ़ें, "जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय और भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है वैसे ही उसने भी अपना मुंह न खोला। अत्याचार करके और दोष लगाकर वे उसे ले गए; उस समय के लोगों में से किसने उस पर ध्यान दिया कि वह जीवतों के बीच में से उठा लिया गया?"

यहां परिदृश्य यह है कि यदि आप निर्वंश मर जाते हैं तो भला होता कि आप का जन्म ही नहीं होता क्योंकि आपका तो इस दुनिया में आने का कोई प्रमाण ही नहीं रहा। अतः वह खोजा इस अंश को पढ़कर फिलिप्पुस से पूछता है कि भविष्यद्वक्ता किस की बात कर रहा है? प्रेरितों के काम की पुस्तक 8:35 में लिखा है, "तब फिलिप्पुस... इसी शास्त्र से आरंभ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया।" यहां उस खोजे के लिए जो सत्य था और हमारे लिए जो सत्य है वह यह है कि जो आपके कष्टों से परिचित है वह भयानक है, वह आपका उद्धारकर्त्ता है।

अब हम देखते हैं कि यह सब समाहित होकर पाचवां सत्य प्रकट करते हैंः उसके प्रतिस्थापन से सब सन्तुष्ट होंगे। यशायाह कहता है कि मनुष्य का स्थान ले लेने के कारण वह सबके लिए संतोष प्रदान करता है। ये अन्तिम तीन पद अति श्रद्धा के योग्य हैं क्योंकि वे क्रूस के द्वारा पिता परमेश्वर का संतोष प्रकट करते हैं, क्रूस पर पुत्र परमेश्वर का संतोष प्रकट करते हैं और हम में से प्रत्येक का संतोष प्रकट करते हैं जो हमें क्रूस के द्वारा मिलता है।

हम पिता के संतोष से आरंभ करते हैं। पद 10 में यशायाह कहता है, "यहोवा को यही भाया..." अर्थात परमेश्वर इसी से प्रसन्न था। यह परमेश्वर की इच्छा थी कि उसे कुचले। उसने उसे कष्ट दिया। मैं शपथ खाकर कह सकता हूं कि प्रभु यीशु के साथ जो भी हुआ वह मनुष्य की युक्ति नहीं थी। यह दिव्य योजना

थी। क्रूस पर मसीह की मृत्यु का उत्तरदायी कौन था? यहूदी? नहीं, रोमी अधिकारी? नहीं। पिता परमेश्वर जिसने अपने पुत्र को क्रूस की मृत्यु दी। उसकी इच्छा यही थी। उसे यही भाया। वह इसी से प्रसन्न हुआ।

यह कैसे संभव है कि परमेश्वर अपने ही पुत्र को कुचलने से प्रसन्न हो? सोचिये! परमेश्वर अनन्त पवित्र है, अनन्त सम्मानित है। वह अनन्त महान है। वह अनन्त भला है, अनन्त महिमामय है, हर प्रकार से सही और सिद्ध है। वह न्याय में सिद्ध है अर्थात पाप एक न्यायी एवं भले परमेश्वर का अनन्त प्रकोप जगाता है। पापी मनुष्य एक पूर्णतः न्यायी एवं सिद्ध भले परमेश्वर का अनन्त क्रोध भड़काते हैं।

अतः संपूर्ण महिमा के परमेश्वर के लिए यह संभव नहीं कि आपके और मेरे जीवन में पाप को देखकर कहे, "ओह, कोई बड़ी बात नहीं है। मैं इसे अनदेखा करता हूं।" नहीं, इससे तो परमेश्वर के ईश्वरत्व का समझौता हो जाएगा और परमेश्वर की महिमा कम हो जाएगी, परमेश्वर होने का मूल्य घट जाएगा। मेरे पास दो पुत्र हैं और जब उनका पापी स्वभाव उनकी मां का उग्र विरोध करता है तब आप नहीं कहेंगे, "कोई बात नहीं, मैं तुमसे प्रेम करता हूं।" आप निश्चय ही मेरे पारिवारिक अनुशासन पर उंगली उठाएंगे और इससे भी अधिक आप मेरी पत्नी के लिए मेरे मन में सम्मान पर संदेह करेंगे। अब यदि मैं उसे चुनौती पाता और अपमानित होता देखूं और कुछ न करुं तो इसका अर्थ यह हुआ कि मेरे विचार में वह अच्छे व्यवहार के योग्य नहीं है। अब यदि आप इस काल्पनिक परिदृश्य को देखें तो आप मुझे पूरे जोश के साथ प्रतिक्रिया में देखेंगे–मेरे पवित्र जोश को जो मैं अपन पुत्रों के प्रति प्रकट करुंगा कि मेरी पत्नी का सम्मान है। यह मेरे लिए स्वभाविक ही है।

अतः बात यही है। परमेश्वर अनन्त महिमामय है, और अनन्त मूल्यवान है और वह स्वयं भी इस बात को जानता है। इस कारण परमेश्वर के विरुद्ध छोटा सा पाप भी अनन्त चूक है और उसे यह मानना कि वह कोई बड़ी बात नहीं तो इसका अर्थ है कि परमेश्वर अनन्त महिमामय नहीं है और अनन्त मूल्यवान नहीं है और इसके साथ ही हर छोटे पाप के लिए अनन्त दण्ड का न मानना भी है। अब प्रश्न यह है, परमेश्वर कैसे अनन्त महिमामय, अनन्त मूल्यवान, अनन्त न्यायी होकर कैसे पापियों को बचा सकता है? इसका उत्तर है दास को कुचल देना। यही कारण था कि पिता ने पुत्र को कुचल देने की इच्छा की। यशायाह कहता है कि दास को कुचलने में पिता परमेश्वर अपने न्याय की पूर्ण व्याख्या करता है।

पिता परमेश्वर कभी नहीं दिखाएगा कि पाप बड़ी बात नहीं है। वह तो प्रकट करता है कि पाप एक भयंकर बात है। इस भाग में क्रियाओं को देखें, तुच्छ जाना गया, त्यागा हुआ, दुःखी, रोगी, मारा–कूटा, दुर्दशा में

पड़ा, घायल, कुचला, प्रताड़ित, कोड़े खाए, वध, ऊन कतरना आदि जो मनुष्य नहीं परन्तु परमेश्वर द्वारा हुआ। क्या परमेश्वर पाप से घृणा करता है? निश्चय ही। क्या परमेश्वर पापियों से घृणा करता है? निश्चय ही। क्या वह उसकी सुन्दरता, महिमा, वैभव को अपमानित करनेवाले पापियों के प्रति क्रोध प्रकट करता है?

उसे देखें जो हमारे स्थान में खड़ा है। जी हां, वह खड़ा है। यीशु हमारे दण्ड को उठा रहा है जिससे हमें मुक्ति पाना है परन्तु यदि हम प्रभु को ग्रहण न करें तो हमें क्या मिलेगा? उसने उसे अपने ऊपर ले लिया है। पिता परमेश्वर अपने न्याय को संपूर्ण महिमा में पूरी तरह प्रकट कर रहा है। यशायाह कहता है कि वह अपने प्रेम की पूर्ण अभिव्यक्ति प्रकट करेगा। वह पापियों के प्रति अपने प्रेम के कारण ऐसा करेगा और आपके और मेरे लिए दया के कारण। क्या परमेश्वर पापियों से घृणा करता है? जी हां, क्रूस को देखिए। क्या परमेश्वर पापियों से प्रेम करता है? जी हां, क्रूस को निहारिये।

यहां हम परमेश्वर के सब गुणों को स्पष्ट प्रकट देखते हैं –पाप और पापियों के प्रति उसकी गंभीरता, कम से कम योग्य मनुष्यों के प्रति दया और प्रेम आदि सब कष्टिन दास के चित्रण में व्यक्त है। यही कारण था कि परमेश्वर ने उसे कुचलने की मनसा की क्योंकि इसी प्रकार परमेश्वर सन्तुष्ट होता है और साथ ही पापियों का उद्धार करता है। जब मैं कहता हूं वह सन्तुष्ट होता है तो मेरे कहने का अर्थ है एकरुपता से उसके सब गुणों के प्रकट करना और एक साथ प्रकट करना कि हमारे पापों से हमें मुक्ति मिल जाए। मैं यहां सावधान रहना चाहता हूं। परमेश्वर की पवित्र घृणा, पवित्र क्रोध की चर्चा में मैं यह नहीं दिखाना चाहता कि परमेश्वर कोई निरंकुश शासक है।

धर्मशास्त्र उसका यह रूप प्रकट नहीं करता है। धर्मशास्त्र में हम परमेश्वर के सब गुणों को पूर्णरूप से एकरूप पाते हैं। एक महिमामय परमेश्वर जिसने पापी संसार से संबन्ध बनाने की इच्छा की कि उसने उसके स्थान पर अपना पुत्र रख दिया कि उनके पाप उठा ले। उसकी महिमा न तो कम होगी और न ही किसी प्रकार का समझौता करेगी। उसकी महिमा के प्रकाशन के साथ पापियों को उद्धार भी होगा। हमें यह बोध होना आवश्यक है कि इससे पहले कि क्रूस किसी और के लिए हो तो भाइयों और बहनों क्रूस सब से पहले परमेश्वर के लिए है। हम क्रूस में जो देखते हैं वह जी हां, आपके और मेरे लिए परमेश्वर का प्रेम है परन्तु अधिक गहराई में हम उसका ही चित्रण क्रूस पर देखते हैं अर्थात उसकी महिमा और उसके अन्य सब गुण।

मसीह यीशु किसके लिए मरा? आपके और मेरे लिए। परन्तु इतना ही नहीं। सब जातियों के लिए? जी हों, परन्तु इतना ही नहीं। अन्ततः मसीह यीशु परमेश्वर के लिए मरा। रोमियों 3:25 में लिखा है कि वह परमेश्वर का गुण और न्याय प्रकट करने के लिए मरा था कि वह सन्तुष्ट हो। वाचमेन नी ने कहा है, "यदि मैं मसीह के लहू को सराहता हूं तो मुझे उसके द्वारा परमेश्वर के उद्धार को भी स्वीकार करना होगा। परन्तु वह लहू पहले तो परमेश्वर के लिए है, मेरे लिए नहीं।" पिता परमेश्वर सन्तोष पाएगा। पुत्र सन्तोष पाएगा। यही तो सुन्दरता है कि पुत्र इसे स्वेच्छा से करता है। ऐसा नहीं कि है कि पिता कह रहा हो, "पुत्र, तुझे यह करना है।"

पवित्र त्रिएकत्व के पिता और पुत्र सामंजस्य में कार्य कर रहे हैं। पिता के संतोष और पुत्र के संतोष में आप यहां पिता की इच्छा और पुत्र की आज्ञाकारिता को एक साथ काम करते देखते हैं। अब प्रश्न यह है कि पुत्र को कैसे संतोष प्राप्त होगा?

पहला सत्य, अपनी मृत्यु द्वारा वह परमेश्वर की सन्तान का उद्धार करेगा। उसका प्राण, पद 10 में लिखा है, "जब वह अपना प्राण दोषबलि करे, तब वह अपना वंश देखने पाएगा..." यह मेरा मनभावन पद है। इससे पहले, आप को स्मरण होगा कि लिखा है कि वह जीवितों के बीच से उठा लिया गया जैसे कि निर्वंश हो, उचित होता कि उसका जन्म ही न होता। उसके यहां होने का प्रमाण ही नहीं रहा। परन्तु वह निर्वंश नहीं है। अपनी मृत्यु के द्वारा उसने जन्म दिया।

अपनी मृत्यु के द्वारा वह प्रत्येक जाति, भाषा, कुल, और देश के लोगों को जन्म देता है और वे परमेश्वर का परिवार बन जाते हैं, उसकी सन्तान, उसके पुत्र, पुत्री बन जाते हैं। परमेश्वर अपनी सन्तान द्वारा परमेश्वर के पुत्र–पुत्रियों को उसकी मृत्यु के द्वारा बचाया हुआ देखकर सन्तुष्ट होता है। वह अपने पुनरुत्थान द्वारा परमेश्वर के सामर्थ्य का प्रदर्शन करता है। पद 10 में लिखा है कि वह अपना वंश देखने पाएगा, वह बहुत दिन जीवित रहेगा। यह तो मरे हुए व्यक्ति के लिए शुभ समाचार है। क्योंकि यदि आप मरकर बहुत दिन जीवित रहते हैं तो इसका अर्थ स्पष्ट है कि आपने मृत्यु पर जय पा ली है। यही वह दास करता है।

वह अपने पुनरुत्थान में परमेश्वर का सामर्थ्य प्रकट करेगा। वह ऊंचा उठाया जाएगा तो परमेश्वर की ही इच्छा पूरी करेगा। परमेश्वर की इच्छा पद 10 में यह है, "उसके हाथ ये यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी।" परमेश्वर की इच्छा क्या है? आगे इस प्रकार लिखा है, "वह अपने प्राणों का दुख उठाकर उसे देखेगा और तृप्त होगा; अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा।" यह परमेश्वर की इच्छा है।

इससे न चूकें। और यह पुत्र का सन्तोष भी है। परमेश्वर की इच्छा यह है कि संपूर्ण इतिहास में स्त्री और पुरुष जो पाप के दोषी हैं और परमेश्वर के कोपभाजक हैं इस दास को देखें, उसके बलिदान में विश्वास करें और धर्मी गिने जाएं।

ऐसा करके पुत्र को संतोष प्राप्त होगा और पिता की महिमा होगी। ओह, यह तो अद्भुत बात है! इस पर विचार करें। परमेश्वर की इच्छा उस दास द्वारा प्रतिपल पूरी होती है। इस पल संपूर्ण संसार में जब मनुष्य मसीह यीशु में विश्वास कर रहा है और मसीह की धार्मिकता में आस्था रख रहा है तब पुत्र उनके उद्धार से संतोष पा रहा है और वह सदा संतोष पाता रहेगा। हम स्वयं को इस गद्यांश में उपस्थित पाते हैं– यह कुंजी है– यह इतिहास में प्रत्येक मनुष्य के लिए है जो इस गद्यांश में "हम," "हमारे" पर ध्यान देते हैं और कहते हैं, "वह मैं हूं।" और जिन्हें ये बोध होता है कि भटकी हुई भेड़े वे हैं और दीनता पूर्वक अंगीकार करते हैं, "परमेश्वर ने उस पर हमारे अपराधों और पापों का दण्ड डाल दिया, उन सब का जो उसके इस प्रबन्ध की आवश्यकता को स्वीकार करते हैं और उसमें भरोसा रखते हैं।" हमें परमेश्वर के समक्ष दोषमुक्ति प्राप्त होगी और हम न्याय में उचित ठहराए जाएंगे। हमें सदा के लिए निर्दोष कहा जाएगा। इस विषय में विचार करें। पद 11, "अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा।" इस संपूर्ण पुस्तक में पाप के बाद, विद्रोह के बाद विद्रोह और फिर एक वाक्य में "धर्मी" है।

आपके जीवन में मेरे जीवन में पाप–प्रत्येक पाप का विचार, प्रत्येक पाप का कर्म, गिनती में असंख्य। आप अपने जीवन में पाप को जानते हैं, आप अपने जीवन में पाप की गहराई जानते हैं और उसे अनन्त महिमामय परमेश्वर के समक्ष स्वीकार करते हैं वरन् यशायाह की नाईं बोध होता है, "हाय! हाय! यह पाप मुझ में है।" इस बोध के साथ पल भर में ही आप मसीह में विश्वास करते हैं। तब सर्वोच्च परमेश्वर तुरन्त कहता है, "धर्मी है, निर्दोष है, तेरे पाप मिट गए।" और तुरन्त ही सब पाप मिट जाते हैं। और आप पिता परमेश्वर के समक्ष निर्दोष हो जाते हैं। पिता परमेश्वर के समक्ष आप धर्मी ही नहीं ठहराए जाते वरन् पुत्र परमेश्वर के साथ जयवन्त भी होते हैं।

और हम अनेकों के साथ उसे बांटते हैं और वह सामर्थियों के संग लूट बांट लेगा। 1 कुरिन्थियों अध्याय 3 में पौलुस कहता है कि मसीह में हमें सब कुछ प्राप्त है। रोमियों के अध्याय 8 में पौलुस कहता है कि हम परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं। परमेश्वर के पुत्र के साथ विजेता। यह सुसमाचार का विस्तार है। इसमें संभवतः बुद्धि की बात दिखाई न दे परन्तु यह महिमामय सत्य है जो मसीह के मनुष्यत्व

और कार्य पर निर्भर है। वही कष्टिन दास है। यही सुसमाचार का अपवाद हैः परमेश्वर उन्हें स्वीकार करता है जो अस्वीकार्य है। वह लज्जित मनुष्यों को सम्मान देता है। परमेश्वर विद्रोहियों को राजसी बनाता है।

आप राज्य के वारिस हैं। परमेश्वर पापियों को अपने पुत्र–पुत्री कहता है। क्या वह अवाक् हो जानेवाली बात नहीं? परमेश्वर दोषी को निर्दोष कहता है। पवित्र परमेश्वर हमें देखकर कहता है, "मैं दोषी मनुष्यों से प्रेम करता हूं। तुमने मेरे प्रेम पर भरोसा किया इसलिए मैं तुम्हारे सब दोष मसीह पर ले लेता हूं और तुम्हारे दोष के स्थान पर मैं तुम्हें मसीह की धार्मिकता देता हूं। क्या यह आपके लिए काम करता है? या आप अपने घमण्ड में लज्जा, दोष और पाप के दण्ड को लिए हुए हैं?"

यह संसार का सर्वोच्च है। एक पास्टर थे जिनका नाम चार्ल्स सिमिऊन था। उन्होंने अपने मन फिराव को इस प्रकार व्यक्त किया, "दुःखभोग सप्ताह में जब मैं प्रभु भोज की प्रार्थना पढ़ रहा था तब मेरे सामने यह बात आई–यहूदी जब बलि पर अपने पाप मढ़ते थे तब वे जानते थे कि वे क्या करते हैं।" आपको भी स्मरण होगा! याजक प्रजा का प्रतिनिधित्व करते हुए बकरे के सिर पर हाथ रखता था और वह बकरा उनके पाप ले लेता था। वह पास्टर आगे कहते हैं, "मेरे मन में यह विचार उभरा। क्या? क्या मैं भी अपने पाप किसी पर डाल दूं? क्या परमेश्वर ने मेरे लिए बलि की वस्तु का प्रबन्ध किया है कि उसके सिर पर अपने पाप डाल दूं? तब यदि परमेश्वर ने चाहा तो मैं अपने पाप एक पल भी अपने प्राण पर नहीं रहने दूंगा। इसी प्रकार मैं ने अपने पाप यीशु के पवित्र सिर पर डाल देने का प्रयास किया।"

मैं आपको इसी काम के लिए आमंत्रित करना चाहता हूं। यदि किसी ने मसीह यीशु और क्रूस पर उसके बलिदान में विश्वास नहीं किया है तो वह यह जान ले कि यहां उपस्थित है कि हमारे पाप अपने ऊपर ले ले उसमें विश्वास करें। अपने पाप का बोझ अब न उठाएं। इसी पल अपने पाप उस पर डाल दें। मैं आपसे निवेदन करता हूं कि उस में विश्वास करें।

केवल उसमें विश्वास ही के द्वारा उद्धार है। हम अपने आप कुछ नहीं कर सकते। ऐसे समय जब आप मसीह में विश्वास करते हैं परमेश्वर तुरन्त कहता है, "धर्मी," अपने पाप उसके सिर पर अवश्य डाल दें। उसे अपने पाप उठा ले जाने दें। मेरे भाइयों और बहनों, एक पल भी अपने पाप के बोझ में दबे न रहें। एक पल भी अपने पाप की लज्जा में न रहें। वे उठा लिए गए हैं। मसीह के बलिदान का फल जो आपके लिए खरीदा गया है, आपके पाप की कीमत चुका कर उसका जीवन जीएं। उसने आपके पापों की जो मुक्ति प्रदान की है, उस स्वतंत्रता में जीवन जीएं।